International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 13-02-2026, Accepted: 16-03-2026, Published: 31-03-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 262-265

हर हाल बेगाने में' स्त्री जीवन के विभिन्न पहलू

Sajitha P C[1], Dr. P Geetha[2]
[1] Research Scholar, Department of Hindi, Government Arts and Science College Calicut, Recognized Research Centre, University of Calicut, Kerala, India
[2] Professor and Principal (Rtd), Sri Vyasa NSS College, Wadakkanchery, Kerala, India, Affiliated to University of Calicut, Kerala, India

सारांश
समाज में स्त्री का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। वह माता, बहन, पुत्री और बहू जैसे विभिन्न रूपों में परिवार तथा समाज को जोड़ने वाली प्रमुख कड़ी के रूप में कार्यरत है। स्त्री केवल परिवार की संरचना को बनाए रखने में ही नहीं, बल्कि सामाजिक मूल्यों, संस्कारों और परंपराओं को आगे बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। स्त्री की स्थिति, उसका कार्यक्षेत्र तथा उसकी सीमाएँ समाज के विभिन्न वर्गों में भिन्न–भिन्न रूपों में दिखाई देती हैं। कहीं वह परंपराओं और रूढ़ियों से बंधी हुई दिखाई देती है, तो कहीं वह शिक्षा और जागरूकता के कारण स्वतंत्र और सशक्त रूप में सामने आती है। आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियाँ भी स्त्री की स्थिति को प्रभावित करती हैं। साहित्य में भी समय–समय पर स्त्री जीवन के इन विभिन्न रूपों और स्थितियों का चित्रण किया गया है। साहित्यकारों ने अपने अनुभव और सामाजिक यथार्थ के आधार पर स्त्री की बदलती भूमिका, उसकी समस्याओं, संघर्षों और उपलब्धियों को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। इस प्रकार साहित्य समाज में स्त्री की वास्तविक स्थिति को समझने और उसे नई दृष्टि से देखने का महत्वपूर्ण माध्यम बन जाता है।

मूल शब्दः स्त्री जीवन, स्त्री अस्मिता, सामाजिक स्थिति, पारिवारिक संबंध, त्याग और सेवा,विद्रोही स्त्री, अकेलापन, स्त्री चेतना, सामाजिक यथार्थ

हिंदी कथा साहित्य में मृदुला गर्ग का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से समकालीन समाज, विशेषतः स्त्री जीवन की विविध समस्याओं और अनुभवों को अत्यंत संवेदनशीलता और यथार्थ के साथ प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियों में स्त्री केवल पारंपरिक भूमिका निभाने वाली पात्र नहीं है, बल्कि वह अपने अस्तित्व, अधिकारों और स्वतंत्रता के प्रति जागरूक एक सशक्त व्यक्तित्व के रूप में उभरकर सामने आती है। मृदुला गर्ग के कथा–साहित्य में स्त्री के अनेक रूपों का चित्रण मिलता है। कहीं वह माँ, पत्नी और विधवा के रूप में परिवार की जिम्मेदारियों को निभाने वाली त्यागमयी स्त्री है, तो कहीं वह सामाजिक रूढ़ियों और अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाने वाली विद्रोही स्त्री के रूप में दिखाई देती है। इसके अतिरिक्त उनकी कहानियों में आर्थिक स्थिति के आधार पर भी स्त्री के विविध रूपकृउच्चवर्गीय, मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीयकृका यथार्थ चित्रण मिलता है। उनकी कहानियों में आधुनिक जीवन की अनेक समस्याएँ भी उभरकर सामने आती हैं, जैसे अकेलापन, पारिवारिक विघटन, प्रवासी जीवन की कठिनाइयाँ तथा दहेज जैसी सामाजिक कुरीतियाँ। इन समस्याओं के माध्यम से लेखिका ने स्त्री के आंतरिक संघर्ष, उसकी संवेदनाओं और उसके आत्मसम्मान की भावना को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। इस प्रकार मृदुला गर्ग की कहानियाँ स्त्री जीवन के बहुआयामी स्वरूप को उजागर करती हैं और यह स्पष्ट करती हैं कि बदलते समय के साथ स्त्री की सोच, स्थिति और संघर्ष भी निरंतर परिवर्तनशील हैं। उनकी रचनाएँ समाज में स्त्री की स्थिति को समझने तथा उसके अधिकारों और अस्तित्व के महत्व को रेखांकित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

भारतीय पारिवारिक व्यवस्था में माँ को त्याग, ममता और स्नेह की मूर्ति माना जाता है। मातृत्व के अंतर्गत स्त्री केवल कर्तव्यपरायण पत्नी ही नहीं रहती, बल्कि वह परिवार के लिए अन्नपूर्णा, संरक्षिका और स्नेह का स्रोत भी बन जाती है। मातृत्व स्त्री के जीवन में परिपूर्णता, संतोष और जीवन की सार्थकता का अनुभव कराता है।'उर्फ सैम' कहानी में माँ के रूप में स्त्री के बदलते स्वरूप का चित्रण मिलता है। इस कहानी की स्त्री पात्र आशा रानी पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित होकर अपने जीवन–शैली में परिवर्तन कर लेती है। वह अपने सौंदर्य को बनाए रखने के लिए अपने बच्चों को स्तनपान नहीं कराती और उन्हें डिब्बे का दूध पिलाती है। यह प्रसंग भारतीय मातृत्व की पारंपरिक भावना और पाश्चात्य जीवन शैली के बीच के अंतर को उजागर करता है। भारतीय समाज में माँ का दूध बच्चे के लिए केवल पोषण का साधन ही नहीं, बल्कि माँ–बच्चे के गहरे भावनात्मक संबंध का प्रतीक भी माना जाता है।

इसी प्रकार 'लौटना और लौटना' कहानी में माँ का चरित्र अपने बेटे के बदलते व्यवहार से दुखी दिखाई देता है। उसका बेटा पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित होकर सिगरेट पीने लगता है। जब माँ उसे सिगरेट पीते हुए देखती है, तो वह नाराज़ होकर उसे समझाती है कि बड़ों के सामने इस प्रकार धुआँ उड़ाना भारतीय संस्कृति का हिस्सा नहीं है। इस प्रसंग के माध्यम से कहानीकार ने पीढ़ियों के बीच के सांस्कृतिक अंतर और माँ की पारंपरिक सोच को प्रभावी ढंग से व्यक्त किया है।

'छत पर दस्तक' कहानी में माँ के जीवन की एक और संवेदनात्मक स्थिति का चित्रण किया गया है। इस कहानी की नायिका नलिनी सेवा–निवृत्ति के बाद अपने बेटे के पास विदेश जाती है। लेकिन उसका बेटा सुधीर पूरी तरह पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित हो चुका होता है। उसके रहन–सहन और व्यवहार में भारतीय संस्कृति की झलक कम दिखाई देती है।

भारतीय पारिवारिक व्यवस्था में पत्नी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। परिवार की संरचना, उसके संस्कारों और भावनात्मक संतुलन का केंद्र प्रायः पत्नी ही होता है। भारतीय नारी की विशेषता यह रही है कि वह गृहस्थ जीवन को केवल एक सामाजिक दायित्व के रूप में नहीं, बल्कि प्रेम, त्याग, समर्पण और सहयोग के माध्यम से एक सांस्कृतिक संस्था के रूप में निभाती है। आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में भी पत्नी के विभिन्न रूपों—समर्पित, संघर्षशील, आधुनिक तथा दुविधाग्रस्तकृका चित्रण

मिलता है। विशेष रूप से मृदुला गर्ग की कहानियों में पत्नी के रूप में नारी के विविध आयाम सामने आते हैं।

'उर्फ सौम' कहानी में नायक सावन प्रताप सिंह का चरित्र प्रवासी जीवन और भारतीय संस्कृति के बीच के द्वंद्व को स्पष्ट करता है। सावन प्रताप सिंह विदेश में रहकर जीवन के अनेक सुखों का अनुभव करता है, फिर भी वह अपने वैवाहिक जीवन के लिए एक भारतीय लड़की को ही चुनना चाहता है। उसके विचार में भारतीय स्त्री परिवार और गृहस्थ जीवन को स्नेह और समर्पण से सँभालने वाली होती है। वह स्पष्ट रूप से कहता है कि उसे ऐसी पत्नी चाहिए जो स्वादिष्ट भारतीय भोजन बना सके और पारिवारिक जीवन को भारतीय परंपराओं के अनुसार निभा सके। लेकिन विवाह के बाद उसकी पत्नी खान–पान, पहनावे और व्यवहार में धीरे–धीरे पश्चिमी जीवन शैली को अपनाने लगती है। इस प्रकार कहानी में यह दिखाया गया है कि प्रवासी परिवेश में भारतीय संस्कृति और पाश्चात्य प्रभाव के बीच संघर्ष किस प्रकार पत्नी के जीवन को भी प्रभावित करता है।

'अगर यों होता' कहानी में नायिका मधुर को एक आधुनिक विचारों वाली भारतीय पत्नी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। मधुर विवाहित है, उसके पति और बच्चे हैं तथा वह अपने पारिवारिक जीवन में संतुष्ट भी है। इसके बावजूद उसके जीवन में एक ऐसा क्षण आता है जब वह एक विदेशी युवक जिम के प्रति आकर्षित हो जाती है। जिम यह कहता है कि उनका प्रेम जीवन का पहला सच्चा प्रेम है, परन्तु मधुर अपने विवेक और भारतीय संस्कारों के कारण इस भावनात्मक आकर्षण को स्वीकार नहीं करती। वह स्पष्ट रूप से कहती है कि वह एक विवाहित भारतीय स्त्री है और अपने पति से प्रेम करती है। अंततः मधुर अपने विचार और मर्यादा को महत्व देते हुए अपने पति और परिवार के पास लौटने का निर्णय लेती है। इस प्रकार इस कहानी में पत्नी के रूप में भारतीय नारी की निष्ठा, विवेक और पारिवारिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता का चित्रण किया गया है।

'सितम के फनकार' कहानी में पारिवारिक संबंधों और आधुनिक जीवन शैली के प्रभाव का एक अलग चित्र सामने आता है। इसमें माँ–बेटी के संबंधों के माध्यम से यह दिखाया गया है कि आधुनिकता और व्यस्त जीवन शैली के कारण पारिवारिक संबंधों में दूरी उत्पन्न हो रही है। कहानी में माँ कैंसर के उपचार के लिए केरल में रहती है, जबकि उसकी बेटी सपना और पिता मुरलीधर विदेश में रहते हुए अपनी सुख–सुविधाओं और व्यावसायिक जीवन को अधिक महत्व देते हैं। जब सपना से पूछा जाता है कि वह अपनी माँ के पास क्यों नहीं रहती, तो वह अपने व्यावसायिक दायित्वों और सीमित छुट्टियों का हवाला देती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक जीवन में परिवार और संबंधों की अपेक्षा करियर और व्यक्तिगत उपलब्धियों को अधिक महत्व दिया जाने लगा है।

आधुनिक समय में शिक्षा, जागरूकता और समानता की भावना के कारण स्त्री जीवन में अनेक परिवर्तन आए हैं। विशेष रूप से विधवा से जुड़ी पारंपरिक सामाजिक मान्यताओं में भी धीरे–धीरे बदलाव दिखाई देने लगा है। पहले समाज में विधवा को अनेक प्रतिबंधों और सामाजिक बंधनों में बाँधकर देखा जाता था, किंतु आज वह अपने आत्मसम्मान, स्वावलंबन और स्वतंत्र जीवन के प्रति अधिक सजग हो रही है। मृदुला गर्ग ने अपनी कहानियों में विधवा को केवल दुख और निराशा से घिरी हुई स्त्री के रूप में प्रस्तुत नहीं किया है, बल्कि उसे आत्मविश्वासी, स्वाभिमानी और आत्मनिर्भर व्यक्तित्व के रूप में भी दिखाया है। उनकी कहानियों में विधवा जीवन की कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए भी अपने अस्तित्व और सम्मान को बनाए रखने का प्रयास करती है।

'छत पर दस्तक' कहानी में नायिका नलिनी विधवा है। नलिनी ने अपने जीवन का अधिकांश समय संयुक्त परिवार में रहकर परिवार की जिम्मेदारियों को निभाने में बिताया है। वह एक स्वाभिमानी और कर्तव्यनिष्ठ स्त्री है, जिसने जीवन की हर परिस्थिति का धैर्य और साहस के साथ सामना किया है। सेवा–निवृत्ति के बाद भी वह दूसरों पर निर्भर होकर नहीं जीना चाहती, बल्कि वह अपने पैरों पर खड़े रहने का संकल्प रखती है।

नलिनी अपने बेटे के साथ विदेश चली जाती है किंतु वहाँ वह अकेलेपन और असहजता का अनुभव करती है। विदेशी परिवेश में उसे अपने जीवन की दिशा को लेकर कई प्रकार की चिंताएँ घेर लेती हैं। जब वह भारत लौटने के बारे में सोचती है, तब उसके मन में यह विचार आता है कि वह कोई न कोई काम करके अपना जीवनयापन कर सकती हैकृजैसे कपड़े सिलना, खाना बनाकर दफ्तरों में टिफिन भेजना या कोई छोटा–मोटा व्यवसाय शुरू करना। उसके मन में यह विश्वास है कि यदि एक बार स्त्री हिम्मत कर ले, तो वह अपने जीवन में बहुत कुछ कर सकती है। इस प्रकार नलिनी का चरित्र विधवा के आत्मविश्वास, स्वाभिमान और स्वावलंबन का प्रतीक बनकर सामने आता है। वह यह संदेश देती है कि विधवा होना जीवन की समाप्ति नहीं है, बल्कि साहस और आत्मविश्वास के साथ स्त्री अपने जीवन को नई दिशा दे सकती है। इस प्रकार मृदुला गर्ग ने अपनी कहानी के माध्यम से विधवा की एक नई और सशक्त छवि प्रस्तुत की है।

मृदुला गर्ग की कहानियों में उच्चवर्गीय नारी का चित्रण आधुनिक, शिक्षित और आत्मनिर्भर स्त्री के रूप में मिलता है। इस वर्ग की स्त्रियाँ आर्थिक रूप से सशक्त होने के कारण स्वतंत्र जीवन जीने की आकांक्षा रखती हैं। इनके जीवन में भौतिक सुख–सुविधाओं की कमी नहीं होती, किंतु कई बार इनका जीवन भावनात्मक खालीपन और अकेलेपन से भी घिरा हुआ दिखाई देता है। आधुनिकता और पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण इनके पारिवारिक संबंधों में भी परिवर्तन आया है। इस प्रकार मृदुला गर्ग की कहानियों में उच्चवर्गीय नारी केवल ऐश्वर्य और सुविधा का प्रतीक नहीं है उसके जीवन की जटिलताएँ, मानसिक द्वंद्व और सामाजिक परिस्थितियाँ भी स्पष्ट रूप से सामने आती हैं। लेखिका ने इस वर्ग की स्त्रियों के माध्यम से आधुनिक समाज में नारी के बदलते स्वरूप को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

मृदुला गर्ग की अधिकांश कहानियों में उच्चवर्गीय नारी का चित्रण किया गया है। 'अगर यों होता', 'एक और विवाह' और 'सितम के फनकार' जैसी कहानियाँ उच्चवर्गीय समाज की जीवन–शैली और मानसिकता को प्रस्तुत करती हैं। इन कहानियों की नारी पात्र बाहरी रूप से स्वतंत्र और आधुनिक दिखाई देती हैं, किंतु उनके जीवन में अनेक मानसिक और पारिवारिक समस्याएँ भी विद्यमान हैं। मृदुला गर्ग ने अपने कथा–साहित्य में उच्चवर्गीय समाज के रहन–सहन, आडंबर और जीवन–शैली का भी मार्मिक चित्रण किया है। 'एक और विवाह' कहानी में उच्चवर्गीय समाज का स्पष्ट चित्र मिलता है। इस कहानी की नायिका कोमल एक ऐसे परिवार से संबंधित है जिसका रहन–सहन उच्चवर्गीय है। उसके पिता एक कंपनी के मालिक हैं। इस प्रकार कहानी के माध्यम से उच्चवर्गीय समाज की सामाजिक स्थिति और जीवन–शैली का यथार्थ चित्रण किया गया है।

भारतीय समाज में परंपराओं का विशेष महत्व रहा है। यही कारण है कि विवाह के बाद नारी का जीवन प्रायः पारंपरिक मूल्यों और कर्तव्यों के अनुरूप ढल जाता है। वह अपने पति और परिवार के प्रति निष्ठा, समर्पण और जिम्मेदारी का निर्वाह करती है। मृदुला गर्ग की कहानियों में पत्नी के इस निष्ठावान और कर्तव्यपरायण रूप का यथार्थ चित्रण देखने को मिलता है। 'छत पर दस्तक' कहानी की नायिका नलिनी त्यागमयी और सेवा–परायण नारी का प्रतिनिधित्व करती है। नलिनी ने अपने पूरे जीवन में परिवार की जिम्मेदारियों को निभाते हुए कभी निजी जीवन या व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अनुभव नहीं किया। उसे परिवार के भीतर अनेक कठिनाइयों और उपेक्षाओं का सामना करना पड़ा। पति विवेक की मृत्यु के बाद उसकी परिस्थितियाँ और भी कठिन हो गईं। उसके

जीवन की स्थिति का वर्णन करते हुए कहा गया है कि विवेक के न रहने पर उसका कमरा जैसे रेलवे प्लेटफॉर्म बन गया था, जहाँ आने–जाने वाले मेहमान ठहरते रहते थे। कुछ समय बाद उसे अपना कमरा छोड़कर घर के पीछे की छोटी–सी कोठरी में रहना पड़ा।

सेवानिवृत्ति के बाद नलिनी अपने बेटे सुधीर के साथ रहने के लिए अमेरिका चली जाती है, किंतु वहाँ भी उसे अपेक्षित सम्मान और अपनापन नहीं मिलता। सुधीर पूरी तरह पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित हो चुका है और निजी जीवन (प्राइवेसी) को अधिक महत्व देता है। इसी कारण वह अपनी माँ को भी अपने निजी जीवन में हस्तक्षेप नहीं करने देना चाहता। इस स्थिति से नलिनी अत्यंत दुखी और असहाय अनुभव करती है। अंततः जब नलिनी विदेश से लौटने का निर्णय लेती है, तब वह अपने भविष्य को लेकर चिंतित हो जाती है। उसके सामने यह प्रश्न खड़ा होता है कि भारत लौटकर वह कहाँ जाएगी और किस प्रकार अपना जीवन व्यतीत करेगी। यह स्थिति त्यागमयी नारी के उस यथार्थ को सामने लाती है, जिसमें वह जीवन भर परिवार के लिए समर्पित रहती है, फिर भी अंततः उसे अकेलेपन और असुरक्षा का सामना करना पड़ता है।

इस प्रकार मृदुला गर्ग की कहानियों में सेवा–परायण और त्यागमयी स्त्री का चित्रण अत्यंत यथार्थपूर्ण और संवेदनशील है। उनके नारी पात्र त्याग, समर्पण और सहनशीलता के प्रतीक होते हुए भी अपने जीवन की कठिन परिस्थितियों से जूझते हुए दिखाई देते हैं। लेखिका ने इन पात्रों के माध्यम से भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति और उसके जीवन के संघर्षों को प्रभावशाली ढंग से उजागर किया है।

स्त्री के व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण रूप उसका विद्रोही स्वरूप है। जब नारी अपने अधिकारों, अस्तित्व और सम्मान की रक्षा के लिए अन्याय, रूढ़ियों और सामाजिक बंधनों का विरोध करती है, तब उसका यह रूप विद्रोह के रूप में सामने आता है।आधुनिक समय में नारी शिक्षा, जागरूकता और सामाजिक परिवर्तन के कारण अपने अधिकारों के प्रति अधिक सजग हो गई है। वह पुरुषों के समान जीवन जीने की आकांक्षा रखती है और अपनी इच्छाओं तथा स्वतंत्रता को महत्व देती है। विद्रोह का अर्थ केवल विरोध करना नहीं है, बल्कि व्यवस्था और व्यक्ति द्वारा किए जाने वाले अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाना भी है।

मृदुला गर्ग की कहानी 'शहर के नाम' में स्त्री के विद्रोही स्वर को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस कहानी की नायिका राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों के प्रति जागरूक है। वह सन् 1975–76 के आपातकाल का विरोध करती है और राजनीति की विसंगतियों के विरुद्ध आवाज उठाती है। नायिका के पिता एक उच्च पद पर कार्यरत प्रशासक हैं और अपनी प्रतिष्ठा तथा सामाजिक मान–सम्मान के कारण वे उसे उसकी इच्छा के विरुद्ध उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका भेज देते हैं। किंतु नायिका का मन अपने देश और समाज से जुड़ा रहता है। वह मजदूरों की बस्तियों में जाकर नाटक करती है और अपने नाटकों के माध्यम से शोषण, भ्रष्टाचार और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाती है। इस प्रकार वह सामाजिक और राजनीतिक संघर्षों में सक्रिय भागीदारी करती है।

इसी प्रकार 'एक और विवाह' कहानी की नायिका कोमल भी विद्रोही स्वभाव की स्त्री है। कोमल एक शिक्षित और स्वतंत्र विचारों वाली महिला है, जो विवाह के पारंपरिक स्वरूप को स्वीकार नहीं करती। वह व्यवस्थित विवाह में विश्वास नहीं करती और प्रेम को अधिक महत्व देती है। उसके विचार में विवाह केवल सामाजिक बंधन नहीं वह तभी सार्थक है जब दोनों व्यक्तियों के बीच वास्तविक प्रेम और आत्मिक संबंध हो। कोमल के विचारों के माध्यम से लेखिका ने आधुनिक नारी की स्वतंत्र सोच और उसके बदलते दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार मृदुला गर्ग की कहानियों में विद्रोही नारी का स्वर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उनकी स्त्री पात्र सामाजिक रूढ़ियों, परंपराओं और अन्यायपूर्ण व्यवस्थाओं का विरोध करती हैं तथा अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती हैं। वास्तव में मृदुला गर्ग की कहानियाँ यह संदेश देती हैं कि स्वतंत्रता के बिना किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास संभव नहीं है। इसलिए उनकी नारी पात्र अपने जीवन को स्वतंत्र और स्वाभिमानपूर्ण ढंग से जीने का प्रयास करती हैं।

आधुनिक जीवन की व्यस्तता, पारिवारिक विघटन और प्रवासी जीवन के कारण अकेलापन आज की एक गंभीर समस्या बन गया है। मृदुला गर्ग की कहानियों में यह समस्या विशेष रूप से नारी पात्रों के माध्यम से व्यक्त होती है।'बर्फ बनी बारिश'कहानी में नायिका बिन्नी के अकेलेपन का मार्मिक चित्रण किया गया है। जब उसका पुत्र और पति अमेरिका चले जाते हैं, तब वह गहरे अकेलेपन का अनुभव करती है। इस कहानी में बिन्नी और अमर दोनों ही अपने–अपने जीवन के अकेलेपन से जूझते दिखाई देते हैं। जब अमर अपने अकेलेपन की बात करता है, तब बिन्नी कहती है— "अकेला कौन नहीं है दुनिया में?"1 इस कथन के माध्यम से लेखिका ने यह स्पष्ट किया है कि आधुनिक समाज में अकेलापन एक सार्वभौमिक मानवीय अनुभव बन चुका है।

मृदुला गर्ग ने अपने कहानी साहित्य के माध्यम से दहेज प्रथा से उत्पन्न स्त्री की पीड़ा, सामाजिक दबाव और मानसिक संघर्ष को उजागर किया है। इस प्रकार उनकी कहानियाँ केवल साहित्यिक रचनाएँ ही नहीं हैं, बल्कि समाज में व्याप्त कुरीतियों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी हैं। 'लौटना और लौटना' कहानी में दहेज प्रथा की मानसिकता को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है। इस कहानी में पिता अपने पुत्र के विवाह को आर्थिक लाभ का साधन मानते हैं। उनका बेटा अमेरिका में काम करता है, इसलिए वे उसके विवाह के माध्यम से अधिक दहेज प्राप्त करने का सपना देखते हैं। वे पत्नी से कहते हैं कि " तभी न सोचता हूँ ,कहीं अच्छी जगह शादी –ब्याह ते हो जाए तो दहेज के रूपायों से ही मकान खडा हो जाए ।"2 समाज में शिक्षित और विदेश में कार्य करने वाले युवकों की "कीमत" अधिक मानी जाती है और विवाह को एक प्रकार के आर्थिक लेन–देन में बदल दिया जाता है। यहाँ विवाह का पवित्र संबंध भी लालच और सामाजिक प्रतिष्ठा की भावना से प्रभावित हो जाता है।

वास्तव में भारतीय समाज में दहेज एक जटिल और लंबे समय से चली आ रही समस्या है। कई परिवारों में दहेज को सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता है। इस कारण कुछ अभिभावक अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए अपनी आर्थिक क्षमता से अधिक खर्च कर देते हैं और परिणामस्वरूप स्वयं ही अनेक आर्थिक और मानसिक समस्याओं में घिर जाते हैं।दहेज प्रथा के कारण लड़की का जन्म भी कई परिवारों में चिंता का विषय बन जाता है। दहेज के कारण होने वाले अत्याचार और मौत की घटनाएँ समाज में स्त्री की असहाय स्थिति को उजागर करती हैं। यद्यपि कानून के अनुसार दहेज लेना और देना अपराध है, फिर भी यह कुप्रथा समाज में पूरी तरह समाप्त नहीं हो पाई है।

मृदुला गर्ग की कहानी 'सितम के फनकार' प्रवासी भारतीयों के जीवन में मौजूद आडंबर, दोहरे मापदंड और पाश्चात्य संस्कृति की अंधी नकल पर तीखा व्यंग्य प्रस्तुत करती है। इस कहानी में विदेश में बसे भारतीयों की मानसिकता का यथार्थ चित्रण मिलता है, जहाँ वे एक ओर विदेशी जीवन–शैली को श्रेष्ठ मानते हैं और भारतीय परंपराओं की आलोचना करते हैं, जबकि उनके भीतर भारतीय संस्कार अब भी जीवित रहते हैं।

कहानी की नायिका सोनिया अमेरिका में मिस्टर जीवन वर्मा के घर भोजन के लिए जाती है। वहाँ उसे जीवन वर्मा की

मेहमाननवाज़ी में कृत्रिमता और विदेशी शिष्टाचार का आडंबर दिखाई देता है। उदाहरण के लिए, सोनिया को कमरे में इस प्रकार बिठाया जाता है कि सामने लगी एकमात्र तस्वीर सीधे उसकी दृष्टि में आए। यह व्यवस्था एक प्रकार के दिखावे और औपचारिकता का प्रतीक बन जाती है।

जीवन वर्मा बातचीत के दौरान भारतीय खान–पान और शिष्टाचार की आलोचना करता है। वह अपनी पत्नी सुरुचि की ओर संकेत करते हुए कहता है कि वह केवल कुछ पारंपरिक भारतीय व्यंजन बनाना जानती है और उसे वही पसंद हैं, मानो यह कोई कमी या अपमान की बात हो। इस प्रसंग से यह स्पष्ट होता है कि सुरुचि अपने पति के दिखावे का साथ देने के लिए विवश है, जबकि भीतर से वह आज भी भारतीय संस्कृति और परंपराओं से जुड़ी हुई है।इस प्रकार 'सितम के फनकार' कहानी प्रवासी भारतीयों के जीवन में व्याप्त दिखावे, सांस्कृतिक द्वंद्व और मानवीय संवेदनाओं के क्षरण को उजागर करती है। कहानी यह भी स्पष्ट करती है कि आधुनिकता और विदेशियत के आकर्षण के बीच भी भारतीय संस्कार और मानवीय संवेदनाएँ पूरी तरह समाप्त नहीं होतीं, बल्कि कहीं न कहीं अंतर्मन में वे जीवित रहती हैं।

इसके साथ ही उनकी कहानियों में आधुनिक जीवन की समस्याओंकृजैसे अकेलापन, पारिवारिक विघटन, प्रवासी जीवन की दूरी तथा दहेज जैसी सामाजिक कुरीतियोंकृका भी यथार्थ चित्रण मिलता है। डॉ नारायण रेड्डी के अनुसार –" मृदुला जी स्त्री को उपभोग और प्रयोग की वस्तु नहीं भरा–पूरा जीवित व्यक्तित्व मानती है। उन्होंने जिस नारी का चित्रण अपने साहित्य में किया है वह घर परिवार की देहरी लांघकर बाहर आने वाली, स्वतंन्त्र चिंतन और निर्णय क्षमता से सम्पन्न नारी है। "3 मृदुला गर्ग का मानना है कि नारी और पुरुष कि स्वतंत्रता में कोई अंतर नहीं है ।'बर्फ बनी बारिश', 'छत पर दस्तक' और 'लौटना और लौटना' जैसी कहानियों के माध्यम से लेखिका ने यह दिखाया है कि बदलते सामाजिक परिवेश में नारी अनेक मानसिक और सामाजिक संघर्षों से गुजरती है।इस प्रकार स्पष्ट होता है कि मृदुला गर्ग की कहानियाँ केवल नारी जीवन का चित्रण ही नहीं करतीं, बल्कि समाज में व्याप्त कुरीतियों और विसंगतियों को उजागर करते हुए परिवर्तन की प्रेरणा भी देती हैं। उनकी रचनाएँ नारी की चेतना, आत्मसम्मान और स्वतंत्रता के महत्व को रेखांकित करती हैं तथा आधुनिक समाज को अधिक संवेदनशील और न्यायपूर्ण बनाने का संदेश देती हैं।

संदर्भ सूची

1. मृदुला गर्ग– हर हाल बेगाने – पृष्ठ संख्या 87
2. मृदुला गर्ग –हर हाल बेगाने –पृष्ठ संख्या –29
3. https://www.sahityasamhita.org/2023
4. https://sahityasrijan.com/har-haal-begaane/
5. https://gadyakosh.org/gk